ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 2 | Issue 11 | November 2024
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i11.97

माध्यमिक स्तर पर योग शिक्षा के पाठ्यक्रम का मूल्यांकनात्मक विश्लेषण

कमलेश सिंह[1], डॉ0 बाबू लाल तिवारी[2],

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक, शिक्षा विभाग, बुन्देलखण्ड कॉलेज, झांसी

एवं

शोध छात्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी

[2]शोध पर्यवेक्षक, पूर्व प्राचार्य, बुन्देलखण्ड कॉलेज, झांसी

[1]**E-mail:** mphilkamalesh.jhansi@gmail.com

शोध–सार

शिक्षा को प्रशासनिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मुख्यतया तीन स्तरों प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर में विभाजित किया गया है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा के बीच का शैक्षिक स्तर है, जिसमें सामान्यतः कक्षा 6 से 12 तक की शैक्षिक व्यवस्था आती है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यर्थियों की अवस्था 12 वर्ष से 18 वर्ष के बीच की होती है। किसी भी शैक्षिक स्तर की शैक्षिक गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुसार स्कूली शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम, शैक्षणिक ढाँचे और पाठ्यक्रम रूपरेखा को एक 5+3+3+4 डिजाईन में मार्गदर्शित होगी। योग शिक्षा प्राचीन भारतीय परंपराओं में से एक सर्वोत्तम उपलब्धि है, जो हमें वैश्विक पटल पर गौरवान्वित करती है।

माध्यमिक स्तर पर विभिन्न बोर्डों में योग शिक्षा के पाठ्यक्रम की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि यू0पी0 बोर्ड में वर्ष 2019–20 के सत्र में "नैतिक, योग, खेल एवं शारीरिक शिक्षा" विषय नामक शीर्षक के अंतर्गत ही योग शिक्षा भी समाहित है। "योग शिक्षा" का स्वतंत्र विषय के रूप में कोई अस्तित्व नहीं है। योग शिक्षा यू0पी0 बोर्ड में माध्यमिक स्तर पर "नैतिक, योग, खेल एवं शारीरिक शिक्षा" नामक विषय के अंतर्गत ही एक उपविषय के रूप में सम्मिलित है। सी0बी0एस0ई0 बोर्ड में माध्यमिक स्तर पर "योग शिक्षा" विषय "योगा" नामक शीर्षक के अंतर्गत एक स्वतंत्र विषय के रूप में सम्मिलित है। आई0सी0एस0ई0 बोर्ड में भी योग शिक्षा "शारीरिक शिक्षा" नामक शीर्षक के अंतर्गत ही उसके एक भाग के रूप में समाविष्ट है। आई0सी0एस0ई0 बोर्ड में भी "योग शिक्षा" नामक विषय का स्वतंत्र रूप से अपना कोई अस्तित्व नहीं है। विभिन्न बोर्डों के पाठ्यक्रमों का विश्लेषण करने पर पाते हैं कि सभी बोर्डो में योग शिक्षा के पाठ्यक्रमों की स्थिति भिन्न–भिन्न है। विभिन्न बोर्डों में कहीं "योग शिक्षा" नामक विषय के पाठ्यक्रम को पूर्ण विषय के रूप में स्थान दिया गया है तो कहीं आंशिक रूप से स्थान दिया गया है। जिस प्रकार योग शिक्षा की लोकप्रियता बढ़ रही है। वह दिन दूर नहीं जब निकट भविष्य में योग शिक्षा एक स्वतंत्र विषय के रूप में माध्यमिक स्तर पर भी सभी बोर्डो में अपना स्थान बना पायेगी।

संकेत शब्दः योग शिक्षा, माध्यमिक स्तर, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन।

प्रस्तावनाः

शिक्षा को मुख्यतः तीन स्तरों में बांटा गया है प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा के बीच का शैक्षिक स्तर है, जिसे सामान्यतः कक्षा 6 से 12 तक का शैक्षिक स्तर माना जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुसार माध्यमिक स्तर की शिक्षा में स्कूल शिक्षा के लिए एक नया और व्यापक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा एन0सी0एफ0एस0ई0 2020–21 एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा समयानुकूल अग्रणी पाठ्यचर्या आवश्यकताओं के आधार पर तथा राज्य सरकारों, मंत्रालयों, केंद्र सरकार के संबंधित विभागों एवं अन्य विशेषज्ञ निकायों सहित सभी हितधारकों के साथ परामर्श करके तैयार किया जायेगा और इसे सभी क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराया जायेगा। उसके बाद एन0सी0एफ0एस0ई0 की प्रत्येक 5–10 वर्षों में महत्वपूर्ण पाठ्यचर्या को ध्यान में रखते हुए समीक्षा एवं अद्यतनीकरण किया जायेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुसार स्कूली शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम, शैक्षणिक ढाँचे और पाठ्यक्रम रूपरेखा को एक 5+3+3+4 डिजाईन में प्रस्तुत किया गया। जिसमें सेकेण्डरी स्टेज (कक्षा 9 से 12 दो फेज में यानि 9 और 10, दूसरे में 11 और 12, 14 से 18 वर्ष के बच्चों सहित शामिल होगी।)

किसी भी विषय के अस्तित्व में आने के लिए सबसे पहली आवश्यकता होती है कि उस विषय की समाज को उसकी उपयोगिता का आभास हो और उसकी दार्शनिक विचारधारा के आधार पर विषय वस्तु का संगठन बना हो। साधारणतः विषय वस्तु के प्रारूप को ही पाठ्यक्रम कहते हैं। माध्यमिक स्तर पर योग शिक्षा के पाठ्यक्रम का मूल्यांकनात्मक विश्लेषण करने से पहले हमें तीन शब्दों माध्यमिक स्तर, योग शिक्षा व पाठ्यक्रम के अर्थ का विश्लेषण कर लेना चाहिए। प्रथमतः माध्यमिक स्तर से हमारा आशय केवल कक्षा–6 से कक्षा–12 तक की शिक्षा व्यवस्था से होता है। इस माध्यमिक स्तर को भी अलग से कक्षा 6 से 8 को पूर्व माध्यमिक स्तर व कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा व्यवस्था को उच्चतर माध्यमिक स्तर में रखा गया है। यहाँ योग शिक्षा से तात्पर्य है व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक अभ्यास का सर्वोत्कृष्ट अनुशासन। योग शिक्षा प्राचीन पूर्व वैदिक भारतीय परंपराओं में से एक सर्वोत्तम उपलब्धि है।

पतंजलि ने अपने योग–दर्शन के समाधि–पाद के द्वितीय सूत्र में योग को परिभाषित करते हुए बताया है–

"योगश्चित्तावृति निरोध"

अर्थात् चित्त की वृतियों का निरोध ही योग है।

पाठ्यक्रम शब्द अंग्रेजी भाषा के "Curriculum" का हिन्दी रूपान्तरण है। "पाठ्यक्रम" (Curriculum) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द "Currere" (कुरेर) से हुई है जिसका अर्थ है– "दौड़ का मैदान" शैक्षिक परिदृश्य में पाठ्यक्रम की तुलना दौड़ के मैदान से की गई है। जिसको विद्यार्थी रूपी घुड़सवार दौड़कर अर्थात् आत्मसात् कर अपने लक्ष्य तक पहुँचता है। पाठ्यक्रम अपने आप में एक विस्तृत शब्द है जिसमें पाठ्य विवरण (Syllabus) तथा विद्यालय का पर्यावरण भी अर्न्तनिहित है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर कमीशन, 1952–53) ने पाठ्यक्रम के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि– "पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषयों से ही नहीं हैं जो विद्यालय में परम्परागत ढंग से पढ़ाये जाते हैं, बल्कि इसमें बच्चों के वे सभी अनुभव निहित होते है, जिन्हें वे विद्यालय के कक्षा, प्रयोगशाला, पुस्तकालय, कार्यशाला तथा खेल के मैदान में प्राप्त करते हैं। पाठ्यक्रम में वे सभी अनुभव भी सम्मिलित हैं जो बच्चों को शिक्षकों तथा अपने साथियों के औपचारिक एवं पारस्परिक संबंधों से प्राप्त होते हैं। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन ही पाठ्यक्रम बन जाता है। जिसमें बच्चों के व्यक्तित्व के सभी पक्ष प्रभावित हो सकते है तथा यह उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के संतुलित विकास में सहायक होता है।"

कनिंघम (Cunnigham) महोदय ने पाठ्यक्रम के संबंध में एक स्पष्ट धारणा प्रस्तुत की है– "पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथ में वह साधन है जिससे वह अपनी चित्रशाला (विद्यालय) में अपनी सामग्री (छात्र) को अपने आदर्शों (उद्देश्यों) के अनुसार ढालता है।"

अध्ययन का शीर्षक– माध्यमिक स्तर पर योग शिक्षा के पाठ्यक्रम का मूल्यांकनात्मक विश्लेषण

साहित्य समीक्षा

नागर, सुनीता कुमारी (2012) "वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता" नामक अपने लेख में बताया है– वर्तमान युग में व्यक्ति भौतिकता की तरफ तेजी से भाग रहा है। फलतः विभिन्न क्षेत्रों में उसे प्रतियोगिता/प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। जिसके कारण वह तनाव, थकान, अशांति का शिकार होकर रक्तचाप, हृदयघात, डायबिटीज आदि अनेकों जानलेवा बीमारियों से ग्रसित होता जा रहा है। इससे ज्ञात होता है कि व्यक्ति प्रतिदिन उन्नति के नाम पर अवनति की ओर कदम बढ़ा रहा है। इसका मुख्य कारण है, दोषपूर्ण जीवनशैली। योग वस्तुतः एक जीवनशैली है, गंभीर दार्शनिक चिंतन है और संपूर्ण चिकित्सा विज्ञान है। सृष्टि के आदि से ही भारतीय ऋषि–मुनियों ने योग को अपने जीवनशैली में समाहित किया था। लेकिन उस समय योग केवल ऋषि–मुनियों तक ही सीमित था। आज योग का चतुर्दिक प्रसार हो रहा है। पाश्चात्य सभ्यता के लोग भी अतिभोगवाद से उभरकर भारतीय परंपराओं एवं योग को आत्मसात कर रहे हैं। योग वास्तव में मनुष्य को कर्मकुशल बनाता है और आज के इस दूषित वातावरण में संतुलित जीवन जीने की कला सिखाता है। इस योग के अभ्यास से अंतरात्मा की गुप्त शक्तियां जागृत हो जाती है और उसमें अनेक गुणों, कलाओं व विशेषताओं का अविर्भाव होने लगता है।

यह योग मनुष्य को कुशल प्रशासन की कला सिखाता है और मन में बैठे विकारों को नष्ट करने में सक्षम बनाता है।

सिंह, बिरेन्द्र कुमार, आलोक गर्डिया (जनवरी 2019) "विद्यालयी शिक्षा में योग शिक्षा की उपादेयता" नामक लेख में योग शिक्षा की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि योग का मूल प्राचीन भारतीय संस्कृति और समाज में विद्यमान है, जिसका उद्देश्य मनुष्य के व्यक्तित्व का समयक विकास रहा है। योग का अभ्यास नियमित और व्यवस्थित रूप से किया जाये तो निश्चित रूप से इससे शांति, संतुष्टि, आत्मनियंत्रण, रोगों की प्रतिरोधक क्षमता एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। साथ ही एकाग्रता बढ़ने के साथ–साथ मन रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्यों में लगता है। योग शिक्षा की महत्ता को अनेक राष्ट्रीय स्तर के आयोग व समितियों के द्वारा स्वीकार किया गया है और इसे विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता में उपयोगी बताया गया है। योग शिक्षा द्वारा विद्यार्थी शरीर, मन, बुद्धि को स्वस्थ रखने व विकसित करने के साथ इस तनावपूर्ण एवं स्पर्धायुक्त जीवन को सरल व सहज बना सकते है। अतः विद्यालय में योग शिक्षा को शामिल करने और उसे सुचारू रूप से क्रियान्वित करने की आवश्यकता हैं, जिससे विद्यार्थियों का जीवन प्रारंभिक शिक्षा काल से शांति, संतुष्टि एवं सफलता की ओर अग्रसर हो सके।

गीताली दास (2020)– छात्र शिक्षक का रवैया योग शिक्षा में समावेश पाठ्यक्रम पर अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में असम के विभिन्न हिस्सों से 80 छात्र शिक्षकों का एक नमूना तैयार किया जो कि मानक विचलन, टी परीक्षण का प्रयोग किया। शोधार्थी ने पाया कि योग को शामिल करने के प्रति छात्र शिक्षक के स्थान के संबंध में उनके दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया।

गुप्ता, प्रोफे0 नीलिमा (20 जून 2023) अमर उजाला में लिखा है– आजादी के अमृतकाल में इस बार संयोग है कि भारत जी–20 की अध्यक्षता कर रहा है, दूसरी तरफ योग दिवस के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व के जन को निरोगी व स्वस्थ

देखना चाहता है। निःसंन्देह भारत का विचार सदैव से आपसी सामंजस्य और सद्भाव का रहा है और योग भी मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य के साथ स्वास्थ्य और मानव कल्याण का का एक समग्र दृष्टिकोण है।

भारत में प्राचीन समय से ही व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता था। व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुये प्राचीन शैक्षिक व्यवस्था में गुरूकुलों व आश्रमों को प्रमुख स्थान दिया गया था। आज समस्त विश्व के शोध जिज्ञासू प्राचीन भारतीय शैक्षिक व्यवस्था पद्धतियों पर शोध कार्य कर रहे हैं। योग शिक्षा भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही गुरूकुल व आश्रमों में विद्यमान होने के प्रमाण मिलते हैं। वर्तमान समय में योग शिक्षा हमारे उच्च शिक्षा संस्थानों में एक विषय के रूप में प्रवेश कर चुकी है, जहां उसका स्वतंत्र पाठ्यक्रम एक विषय के रूप में विकसित हो चुका है। कुछ ही समय से योग शिक्षा का कार्य विभिन्न प्रकार की माध्यमिक शैक्षिक संस्थाओं में भी शुरू होनें की संभावनाएं दिखने लगी है। योग के विभिन्न अंगों जैसे– आसन, योग क्रियाएं, प्रणायाम, षटक्रिया, योग निद्रा, त्राटक एवं ध्यान विधियों पर विभिन्न प्रकार के शोधकार्य हो चुके है व वर्तमान समय में भी विभिन्न विश्वविद्यालयों व उच्च शिक्षा संस्थानों में योग शिक्षा से संबंधित अनुसंधान कार्य गतिमान है। इन सभी शोध कार्यों के विहंगावलोकन का पूर्ण विवरण, देना संभव नहीं है, लेकिन उसके बाद भी कुछ विशेष शोध अध्ययनों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। उक्त वर्णित शोध कार्यों से स्पष्ट है कि "माध्यमिक स्तर पर योग शिक्षा के पाठ्यक्रम का मूल्यांकनात्मक विश्लेषण" सें संबंधित शोध अध्ययन का कार्य अभी तक नहीं किया गया है, जो शोध की रिक्तता को दर्शाता है।

शोध के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर योग शिक्षा के पाठ्यक्रम की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर योग शिक्षा की विषय के रूप में वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर योग शिक्षा के पाठ्यक्रम की वर्तमान स्थिति का विभिन्न बोर्डों के संदर्भ में अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर योग शिक्षा के पाठ्यक्रम के अंकीय विश्लेषण का विभिन्न बोर्डों के संदर्भ में अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा विषय–वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत
अध्ययन में यू0पी0 बोर्ड, सी0बी0एस0ई0 बोर्ड व आई0सी0एस0ई0 बोर्ड एवं एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा निर्मित योग शिक्षा के पाठ्यक्रम का विभिन्न आधारों पर विश्लेषण किया गया है।

शोध परिणाम व विवेचन

माध्यमिक स्तर पर योग शिक्षा के पाठ्यक्रम का विश्लेषण विभिन्न बोर्डों व एन0सी0ई0आर0टी0 के द्वारा प्रस्तुत किये गये योग शिक्षा के पाठ्यक्रम का अवलोकन करते है तो पाते हैं कि यू0पी0 बोर्ड के द्वारा योग शिक्षा का जो पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है वह एक विषय के रूप में न होकर "नैतिक,योग,खेल एवं शारीरिक शिक्षा" नामक विषय के अन्तर्गत उसी में, उसके एक भाग के रूप में समाहित है। अंकीय दृष्टि से देखें तो 100 अंको के विषय में जिसमें 50 अंक सैद्धान्तिक व 50 अंक प्रयोगात्मक के रूप में विभाजित है, जिसमें योग शिक्षा के अंकों के रूप में प्रतिनिधित्व 20 अंक सैद्धान्तिक व 20 अंक प्रयोगिक के रूप में निर्धारित किये गये है।

एन0सी0ई0आर0टी0 ने योग शिक्षा को माध्यमिक स्तर तक "खेल एवं शारीरिक शिक्षा" विषय के अन्तर्गत अनिवार्य विषय के रूप में अपने पाठ्यक्रम में स्थान दिया। 10+2 स्तर तक वैकल्पिक/ऐच्छिक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में स्थान दिया है।

सी0बी0एस0ई0 ने वर्ष 2023–24 के सत्र में योग शिक्षा को योगा (YOGA) विषय के रूप में जिसका Subject Code-841 है, को एक स्वतंत्र विषय के रूप में सम्मिलित किया है। जिसमें योग शिक्षा का अंकीय विभाजन सैद्धान्तिक 50 अंक व प्रयोगिक 50 अंक के रूप में निर्धारित किये गये है।

सारिणी–1

मध्यमिक स्तर पर विषय के रूप में योग शिक्षा के पाठ्यक्रम का अंकीय विश्लेषण

(यू0पी0 बोर्ड, सी0बी0एस0ई0 व आई0सी0एस0ई0 बोर्ड के संदर्भ में)

बोर्ड	विषय	अंकीय विभाजन			पूर्णांक 100
यू0पी0 बोर्ड	योग शिक्षा		सैद्धांन्तिक	प्रायोगात्मक	
	नैतिक		15	–	15
	योग		20	20	40
	खेल एवं शारीरिक शिक्षा		15	30	45
		कुल योग	50	50	100
सी0बी0एस0ई0 बोर्ड	योगा		50	50	100
आई0सी0एस0ई0 बोर्ड	फिजिकल एजुकेशन	10th स्तर	100	100	200
		12th स्तर	70	30	100

सारिणी–1 को देखने से स्पष्ट हो रहा है कि यू0पी0 बोर्ड ने अपने पाठ्यक्रम में योग शिक्षा को "नैतिक, योग, खेल एवं शारीरिक शिक्षा" विषय के अंतर्गत स्थान दिया है। सारिणी–1 में यू0पी0 बोर्ड के "नैतिक, योग, खेल एवं शारीरिक शिक्षा" विषय के अंकीय विभाजन पर जब हम नजर डालते है तो पाते है कि विषय के मूल्यांकन के लिए उसे 100 अंकों के पूर्णांक के अन्तर्गत सैद्धांन्तिक 50 अंक व प्रयोगात्मक 50 अंक में विभाजित किया गया है। इस अंकीय विभाजन को विषय के तीन भागों नैतिक के सैद्धांन्तिक 15 अंक में विभाजित किया गया है, अंकीय विभाजन के दूसरे चरण में योग को सैद्धांन्तिक 20 अंक व प्रयोगात्मक 20 अंक एवं खेल एवं शारीरिक शिक्षा के सैद्धांन्तिक के 15 अंक व प्रयोगात्मक 30 अंक में विभाजित किया गया है। यहां पर जब हम विश्लेषण करते है तो पाते है यू0पी0 बोर्ड के अनिवार्य विषय "नैतिक, योग, खेल एवं शारीरिक शिक्षा" शीर्षक के अंतर्गत ही योग शिक्षा को स्थान दिया गया है, जिसमें योग शिक्षा केवल 40 अंकों

का प्रतिनिधित्व करती है। अर्थात् हम कह सकते है कि योग यू0पी0 बोर्ड में माध्यमिक स्तर पर योग शिक्षा का अंकीय दृष्टि से 40 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी0बी0एस0ई0) के अंतर्गत योग शिक्षा को एक विषय के रूप में पूर्ण प्रतिनिधित्व दिया गया है। सारिणी 1 में जब हम अवलोकित करते है तो पाते है सी0बी0एस0ई0 बोर्ड में योग शिक्षा का अंकीय विभाजन 100 पूर्णाक में 100 अंक का ही है। अर्थात् सी0बी0एस0ई0 बोर्ड में अंकीय दृष्टि से योग शिक्षा का 100 प्रतिशत प्रतिनिधित्व है। सारिणी–1 से ही स्पष्ट हे आई0सी0एस0ई0 बोर्ड में भी माध्यमिक स्तर (कक्षा 6 से 10 तक) योग शिक्षा का पाठ्यक्रम एक स्वतंत्र विषय के रूप में है, जिसका अंकीय विभाजन सैद्धांतिक 100 अंक व प्रयोगिक 100 अंक कुल मिलाकर 200 अंकों के पूर्णांक के रूप में योग शिक्षा का प्रतिनिधित्व है। अर्थात् कक्षा 10 तक योग शिक्षा का प्रतिनिधित्व 100 प्रतिशत है। माध्यमिक स्तर पर ही आई0सी0एस0ई0 बोर्ड में कक्षा–11 व कक्षा–12 के स्तर पर योग शिक्षा स्वतत्र विषय के रूप में न होकर "शरीरिक शिक्षा" विषय के अंतर्गत ही आती है। जिसमें अंकीय दृष्टि से सैद्धांतिक 70 अंक व प्रयोगिक 30 अंक में विभाजित है। आई0सी0एस0ई0 बोर्ड में 12वें स्तर पर पाठ्यक्रम में योग शिक्षा समुचित प्रतिनिधित्व न देकर अल्प प्रतिनिधित्व दिया गया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप मे हम कह सकते हैं कि एन0सी0ई0आर0टी0. व विभिन्न बोर्डों के योग शिक्षा संबंधी पाठ्यक्रमों पर जब हम नजर डालते हैं तो पाते है कि विभिन्न बोर्डो में योग शिक्षा के पाठ्यक्रम की स्थिति एक विषय के रूप में भिन्न–भिन्न है। यू0पी0 बोर्ड में योग शिक्षा "नैतिक, योग, खेल एवं शरीरिक शिक्षा" विषय के अंतर्गत आती है जबकि सी0बी0एस0ई0 बोर्ड में योग शिक्षा "योगा" नामक शीर्षक के अंतर्गत पूर्ण विषय के रूप में सम्मिलित है व आई0सी0एस0ई0 बोर्ड में माध्यमिक स्तर पर 6 से 10 स्तर तक योग शिक्षा एक स्वतंत्र विषय के रूप में सम्मिलित है जबकि 11 से 12 स्तर तक योग शिक्षा "शरीरिक शिक्षा" विषय के अंतर्गत सम्मिलित है। विभिन्न बोर्डों के पाठ्यक्रमों का विश्लेषण करने पर पाते हैं कि सभी बोर्डो में योग शिक्षा के पाठ्यक्रमों की स्थिति भिन्न–भिन्न है। विभिन्न बोर्डों में कहीं "योग शिक्षा" नामक विषय के पाठ्यक्रम को पूर्ण विषय के रूप में स्थान दिया गया है तो कहीं आंशिक रूप से स्थान दिया गया है। जिस प्रकार योग शिक्षा की लोकप्रियता बढ़ रही है। वह दिन दूर नहीं जब निकट भविष्य में योग शिक्षा एक स्वतंत्र विषय के रूप में माध्यमिक स्तर पर भी सभी बोर्डो में अपना स्थान बना पायेगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

[1]. बेस्ट, जॉन डब्ल्यू (1959): "रिसर्च इन एजुकेशन", यू0एस0ए0 प्रेन्टिस हॉल (इंक) एंगिल बुक विल्पस।

[2]. पाठक, पी0डी0 एवं त्यागी जी0एस0डी0 (1982) : "भारतीय शिक्षा आयोगों एवं समितियां " आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर

[3]. भूषण शैलेन्द्र, (2007–8),"जीव विज्ञान शिक्षण" अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–7

[4]. नागर, सुनीता कुमारी (जनवरी, 2012) "वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता", भारतीय आधुनिक शिक्षा, अंक–3, ISSN 0972–5636, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, 110016

[5]. चौबे, प्रसाद सरयू (2015), "तुलनात्मक शिक्षा", श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, ISBN:97899381602-10-2

[6]. एन0सी0ई0आर0टी0 (2015) "योग स्वस्थ जीवन जीने का तरीका", एन0सी0ई0आर0टी0, श्री अरविन्दो मार्ग, नई दिल्ली, 110016 ISBN:978-93-5007-766-5, URL/http://ncert.nic.in

[7]. आयंगर, बी0के0एस0 (2015–16), "योगदीपिका" ओरियन्ट ब्लैक स्वॉन प्राइवेट लिमिटेड 3–6–752 हिमायत नगर हैदराबाद–500029,ISBN:9788125034449

[8]. पटेल, श्रीकृष्ण एवं मनोज प्रजापति, (2017–18),"शारीरिक स्वास्थ्य एवं योग शिक्षा", अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा

[9]. सिंह, वीरेन्द्र कुमार, आलोक गार्डिया (जनवरी, 2019) "विद्यालयी शिक्षा में योग शिक्षा की उपादेयता, भारतीय आधुनिक शिक्षा, अंक–3, ISSN 0972–5632, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, 110016

[10]. सिंह, सौरभ (2019–20), "मूल्य एवं शांति शिक्षा", अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2, ISBN:978-93-863111-24-5

[11]. शुक्ला, नारायण राज,(2019–20),"नैतिक,योग, खेल एवं शारीरिक शिक्षा", राजीव प्रकाशन, प्रयागराज

[12]. दास, गीताली (2020) "छात्र शिक्षक का रवैया योग शिक्षा में समावेश पाठ्यक्रम पर अध्ययन", जर्नल ऑफ क्रिटिकल रिव्यूज छात्र शिक्षा विभाग तेजपुर विश्वविद्यालय असम वॉल्यूम (7) अंक (5)

[13]. कुलश्रेष्ठ, एस0पी0 एवं अन्य (एन0ए0),"जीवविज्ञान शिक्षण", अरिहन्त इलेक्ट्रिक प्रेस, मेरठ, ISBN:978-93-85960-505

[14]. सी0बी0एस0ई0 (मार्च 2023),"सीनियर सेकेण्डरी स्कूल कैरिकुलम 2023–24", सी0बी0एस0ई0, एकेडमिक यूनिट, शिक्षा सदन, 17,राउज एवेन्यू, नई दिल्ली–110002 URL/www.cbse.nic.in

[15]. गुप्ता, प्रोफे0 नीलिमा (20 जून, 2023) अमर उजाला, झांसी संस्करण

[16]. माध्यमिक शिक्षा–आयोग (मुदालियर कमीशन, 1952–53)।

[17]. ICSE (2024) "Regulation and Syllabus", Yoga Subject Code 84, URL- https://cisceboard.org

[18]. ICSE (2024) "Regulation and Syllabus", Yoga Subject Code 875, URL- https://cisceboard.org

[19]. U.P. Board (2023) 10, नैतिक योग, खेल एवं शारीरिक शिक्षा, मोरल, स्पोर्टस एण्ड फिजिकल एजूकेशन सब्जेक्ट कोड–944 URL- https://upms.edu.in

[20]. U.P. Board (2023) 10, नैतिक योग, खेल एवं शारीरिक शिक्षा, स्पोर्टस एण्ड फिजिकल एजूकेशन सब्जेक्ट कोड–173 URL- https://upms.edu.in

[21]. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार–पृष्ठ संख्या–25

[22]. Ministry of HRD: Government of India: "National Policy on Education, 1986" .

Cite this Article

कमलेश सिंह, डॉ0 बाबू लाल तिवारी, माध्यमिक स्तर पर योग शिक्षा के पाठ्यक्रम का मूल्यांकनात्मक विश्लेषण, *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 2, Issue 11, pp. 37-43, November 2024.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i11.97*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Non Commercial 4.0 International License.